INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL

ISSN: 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 1 | FEBRUARY – 2017

कमलेश्वर की कहानियों में यथार्थबोध

मन्नू कुमार शर्मा
बी. ए., एम्. ए., एम्. फिल. एवं पी. एच. डी. (शोधरत्),
विश्वभारती विश्वविद्यालय, बोलपुर, बीरभूम.

i.Lrkouk :
यथार्थबोध शब्द-युग्म दो शब्दों यथार्थ और बोध से बना है जिसका व्यापक अर्थ है 'वास्तविकता का ज्ञान करना'। डॉ० अजबसिंह के अनुसार - "यथार्थ का अर्थ किसी चीज़ को यथावत् (हूबहू) चित्रण करना नहीं होता, चाहे वह नृत्य हो, संगीत, कविता हो, चाहे उपन्यास। उसमें समाज, जीवन एवं संस्कृति जैसी है, वैसा ही चित्रण करना यथार्थ नहीं है, बल्कि यथार्थ में संभावनाओं का संकेत होता है। कला इसकी माँग करती है।"[1] आधुनिक युग में मानव विकास की अंधदौड़ में शामिल हो गया है और वास्तविकता से दूर होता जा रहा है। गुरुदेव रविन्द्रनाथ टेगौर ने 'वास्तविकता' का प्रयोग 'यथार्थ' के स्थान पर किया है। यही नहीं प्रसाद ने भी 'वास्तविकता' को यथार्थ के अर्थ में ही ग्रहण किया है। "यथार्थ की धारणा को नैतिक" रघुवीर सहाय ने स्वीकार किया है।[2] साहित्य हमेशा से जनमानस का आइना रहा है इसलिए ऐसे समय में पाठक वर्ग को वास्तविकता से रू-ब-रू

कराना भी साहित्यकार का फ़र्ज़ बन जाता है। अपने इसी कर्म का निर्वहन करते हुए कमलेश्वर ने अपने साहित्य के ज़रिये यथार्थ का निर्वसन चेहरा जनता के सम्मुख प्रस्तुत किया है। कमलेश्वर ने यूँ तो कई विधाओं में अपनी लेखनी को चलाया है किन्तु कहानी लेखन में उन्हें विशेष स्थान प्राप्त है। 'नई कहानी' का प्रणेता कमलेश्वर है और इसके तीन स्तंभों, मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव और कमलेश्वर का योगदान अतुलनीय है। 'नई कहानी' में मानव, परिस्थितियों के यथार्थ को आधारभूमि बना कर कहानी लेखन की शुरुआत हुई। कमलेश्वर ने सामान्य परिस्थितियों, कस्बे, शहर, गाँव और आम आदमी की अनुभूति को अपनी कहानी का कथ्य बनाया, यही कारण है कि इनकी रचनाएँ पाठक के अंतर्मन को छू जाती हैं।

'पराया शहर' कहानी में अकेला पड़ता मानव अपने अकेलेपन,एकाकीपन से जूझता हुआ समय के साथ बदलते रिश्तों के साथ समाज के खोखलेपन को व्यक्त करता है। इसमें शहर के संत्रास, आधुनिकीकरण, शहरीकरण, यांत्रिकता इत्यादि का मार्मिक एवं हृदयस्पर्शी वर्णन किया गया है। शहर के कुरूप चेहरे को, शहर की दौड़ती- भागती जिंदगी को, छोटे क़स्बे -गाँव से आये लोगों की समस्याओं, मानसिकता के प्रत्येक पक्ष को अपनी कहानी में उजागर करने का प्रयत्न किया है। कमलेश्वर की कहानियाँ निम्न एवं मध्यवर्ग का यथार्थ प्रतिबिंबित करती हैं। "खोई हुई दिशाएँ" कहानी संग्रह की अंतिम कहानी 'पराया शहर' है, इस कहानी संग्रह की भूमिका में उन्होंने इस संग्रह की कहानियों की विशेषता बताते हुए लिखा है - "इस संग्रह की कहानियाँ एक बदली हुई मन: स्थिति की कहानियाँ हैं। तीन वर्ष पहले मुझे टेलीविजन की नौकरी में दिल्ली आना पड़ा। इलाहाबाद छोड़ते हुए बड़ी तकलीफ हुई। पर यहाँ आकर जब चारों तरफ देखना शुरु किया तो लगा कि एकाएक सब कुछ बदल गया है। यहाँ एक नयी जिन्दगी थे, एक ऐसी जिन्दगी जिसके किनारे खड़े होकर देखने से बहाव का पता नहीं चला था। एक अजीब - सा परायापन और बेगानापन है यहाँ।"[3] पराया शहर पिता - पुत्र के अनकहे टूटते रिश्ते में परायापन, बेगानापन, अकेलेपन, अजनबीपन की

कहानी है। आधुनिक समाज में मनुष्य के जीवन में रिश्तों का महत्व, नैतिकता मूल्य खत्म होते जा रहे है।शहर और शहरीकरण का यथार्थ इस कहानी में सूक्ष्म रूप से अभिव्यक्त किया गया है।

'जन्म' कहानी कन्या जन्म की कुरीति पर आधारित है। इसमें कन्या को एक बोझ और पुत्र को वंशवृद्धि का प्रतिक मानते समाज पर करारा तंज कसा गया है। कन्या भ्रूण हत्या और पुत्र प्राप्ति के लिए समाज के विभिन्न तबके के लोग बहुत कुछ करते है। चंदूमुंशी नामक व्यक्ति पुत्र की चाह में कई लड़कियों का पिता बन बैठा है। उसकी पत्नी इस बात से चिंतित है कि यदि इस बार भी लड़की हुई तो उसका और उसकी पुत्री का क्या होगा? वह कैसे उसकी सुरक्षा करेगी? उसका भरण- पोषण कैसे होगा? समाज के सम्मुख एक माँ की बेबसी, लाचारी का हृदयविदारक वर्णन इस कहानी में भली भांति व्यंजित किया गया है। तानों की बारिश और दादी इन कटु शब्दों का वार करती हैं - "अब यह सब अच्छा नही लगता। रोज़ - रोज़ पेट पकडे पड़ी रहती है। घर में बच्चे समझदार हो गए हैं, पर इन्हें शर्म नहीं आती!"[4] एक औरत को किस प्रकार बेबस किया जाता है, उसे बच्चे पैदा करने की मशीन समझा जाता है और इतना करने पर भी यदि लड़का पैदा न हो तो इसका जिम्मेदार भी उसे ही समझा जाता है। कैसी विडंबना है यह ? समाज औलाद में भेदभाव कर सकता है पर एक माँ कैसे करे? इस कहानी में एक माँ की मज़बूरी और कन्या जन्म को पाप मानने की कुप्रथा का हृदयस्पर्शी चित्रण किया गया है।

कमलेश्वर की रचनाएँ अधिकांशतः क़स्बे और शहर के बोध को लिए हुए उनको चरितार्थ करती हैं। शहर की मानसिकता, प्रभाव, वातावरण, स्थिति, परिस्थिति इत्यादि को अपने में समेटे हुए हैं। 'इतने अच्छे दिन' कहानी में बाला और कमली के ज़रिये कमलेश्वर ने घृणित समाज तथा व्यवस्था पर क़रारा तंज कसा है। कथा नायक अकाल और भूख से व्याकुल था। उसकी अच्छाई या उसकी मानवता यथार्थ के ठोस धरातल के नीचे दब जाती हैं। उसके तथा उसकी बहन के सारे मूल्य टूट जाते हैं। अगर भूख की पीड़ा कम होती तो लोग संघर्ष कर पाते परन्तु वह भूख इस हद तक लोगों को वहशी बनाती जा रही है कि कमली स्वयं को बेच रही है और भाई मान रहा है कि 'कितने अच्छे दिन है' दोनों की अच्छी कमाई हो रही है। कैसी विडम्बना है यह? कि लोग अपने नैतिक पतन का, गिरे हुए आदर्शों का, स्वयं का और मानवता का ह्रास होते हुए सुखद अनुभव कर रहा है। यहाँ व्यक्ति जानवर से भी बदतर अवस्था में पहुच चुका है गाँव का ज़मीदार नारी तन से अपनी प्यास मिटा रहा है। भूख की असहनीय अवस्था के कारण दोनों के आदर्श विलुप्त हो जाते हैं "उसके बाएँ गाल की साँवली चमड़ी पर खून की एक सूरती बन्द चिपकी हुई थी। वह उस पर ऊँगली फिराने लगी तो बाला ने पूछा-क्या हुआ? उस साले ने फिर काटा इतने जोर से"[5] यहाँ ये दांत समाज के कुत्सित मानसिकता वाले वर्ग के हैं और वो खून की बूँद निम्न एवं निर्धन जनता पर किये गए शोषण का प्रतीक है।

कमलेश्वर ने सामाजिक यथार्थ को कलागत ईमानदारी के साथ यथार्थबोध से संपृक्त कर अपनी वैचारिकता को व्यक्त किया है। जीवन और समाज के सूक्ष्म से सूक्ष्म पहलूओं पर उसके यथार्थ स्वरूप के माध्यम से ये अपनी वैचारिकता को उद्घाटित कर देते हैं। इन्होने समाज को उसकी व्यापकता के साथ, जिसमें मानवीयता की प्रवृति विद्यमान है, के साथ स्वीकार किया है। ये पूंजीवादी शोषण प्रवृत्ति का विरोध कर स्वस्थ समाज के निर्माण के पक्षपाती हैं। 'दालचीनी के जंगल' इनकी एक सशक्त और मार्मिक कहानी है। जिसमें समाज, व्यवस्था और मानवता का ह्रास दिखाया गया है। फंतासी शैली में भोपाल गैस कांड के पश्चात्, उसके दुष्परिणामों का चित्रण बड़े ही संवेदनशील तरीके से किया गया है। इस मानवीय त्रासदी को लेखक ने सकरुण शब्दों में रेखांकित किया है कि कितने परिवार उजड़ गये, कितनी जाने गयी और लोगों की ज़िन्दगी बद से बदतर हो गयी। प्रशासन की नींद देर से खुली लेकिन पूरी तरह नींद का ख़ुमार नही उतरा। कितनी विकत परिस्थिति होगी जब जानवर का गोश्त औरत के जिस्म से महँगा मिलता होगा, ऐसी स्थिति तो कल्पना से परे और हृदयविदारक है - "मुश्ताक ने उसे देखा और बडबडाया - "पैसों का पहाड़ ! औरत का जिस्म बीस रुपए रात.....मटन चालीस रुपए किलो ! इंसान का गोश्त ग्यारह रुपए किलो....."[6] मुश्ताक़ अपना मानसिक संतुलन खो बैठा है, वो अपनी पत्नि शबनम को भी भूल चुका है फिर भी उसे वो घृणित सत्य नज़र आ रहा है जिससे बुद्धिजीवी वर्ग देखकर भी देखना या समझना नहीं चाहते हैं। मुश्ताक़ आम, भोली भाली

जनता का प्रतिक प्रतीत होता है और प्रशासन मूक दर्शक। कमलेश्वर ने पाठकों के अंतर्मन को इस कहानी के जरिये झंझोर कर रख दिया है।

यथार्थबोध की रचनाएँ मनुष्य की जिस तनाव, संत्रास, घुटन, आक्रोश, कुंठा, आत्मरति यौन विकृति आदि को मुखरित कराती हैं, वे मानव संस्कृति का अंग होने पर भी व्यक्ति के अलगाव की रचनाएँ हैं ये सामाजिक मनोवेत्ता के लिए अधिक उपादेय सामग्री प्रदान कराती हैं।

संदर्भ ग्रन्थ-

1. सिंह, डॉ० अजब, यथार्थवाद: पून्र्मुल्यांकन, पृ० 79, विश्वविद्यालय प्रकाशन ,1998
2. सहाय, रघुवीर, यथार्थ का अर्थ, संपादक -डॉ० सुरेश शर्मा, पृ० 136, राजकमल प्रकाशन, 1994
3. कमलेश्वर, खोई हुई दिशाएँ, भूमिका, भारतीय ज्ञानपीठ, 1966
4. कमलेश्वर, कमलेश्वर : समग्र कहानियाँ, पृ० 56, राजपाल एण्ड संस, 2007
5. कमलेश्वर, कमलेश्वर : समग्र कहानियाँ, पृ० 653, राजपाल एण्ड संस, 2007
6. कमलेश्वर, कमलेश्वर: समग्र कहानियाँ, पृ० 690, राजपाल एण्ड संस, 2007